
Roll No:– 39

Class No:– 15 Question No:– 1

➤➤ *अध्यात्म मार्ग में जब हम गिरते हैं*

➤➤ _ ➤➤ तो उसे महत्व देकर / *IMPORTANCE देकर उसे और न बढ़ाओ*

→ इसे सिर्फ एक *परछाई समझिए...* आई और चली गयी... उसे पकड़कर मत रखो... उसे आकर्षण का केंद्र मत बनाओ... *उस पकड़ कर रखोगे तो और बढ़ेगी...*

→ इस तरह से *IGNORE* करो जैसे हम AIRTEL / VODAFNONE के MSGS को IGNORE करते हैं...

→ किसी भी गलती के बार में *बहुत ज्यादा सोचेंगे तो...* और _एक नयी समस्या खड़ी हो जायेगी_

→ पवित्रता से ध्यान हटाकर _अपवित्रता के बारे में बार बार सोचकर आत्म ग्लानी मत कीजिये_

➤➤ _ ➤➤ *जितना समय आप सफल रहे... उसे अधिक महत्व दीजिये*

→ 1 दिन की अपवित्रता से आत्म ग्लानी की बजाये _29 दिन की पवित्रता की सफलता से खुद को धीरज दीजिये_

➤➤ _ ➤➤ *देहभान के प्रति घृणा भाव उत्पन्न कीजिये*

→ देहभान IS *ABNORMAL...* IT IS NOT NATURAL
